प्रातः क्लास . 26-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप, अंग्रेजी में कहा जाता है सुप्रीम फादर। सतयुग में तुम जब चलेंगे तो वहां अंग्रेजी आदि कोई भी दूसरी भाषा थोड़ी ही होगी। तुम जानते हो सतयुग में हमारा राज्य होताहै। उसमें हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी। फिर बाद में वह भाषा बदली होती जाती है। अनेकानेक भाषाएं हो जाती हैं। जैसा2 राजा वैसे उनकी भाषा चलतीहै। अभी यह तो सभी बच्चे जानते हैं, सिर्फ यहां तो नहीं हैं। सभी सेन्टर्स पर जो भी बच्चे हैं सभी की है एक मत। अपने को आत्मा समझना और और बाप को याद करना है ताकिभूत सभी भाग जाये। क्योंकि बाप है पतित पावन। 5भूतों की तो सभी में प्रवेशता है। आत्मा में ही 5भूतों की प्रवेशता होती है। फिर उन भूतों का विकारों का नाम भी गिना जाता है देह-अभिमान, काम, क्रोध . . ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी कोई ईश्वर है। कब भी कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है, तो बोलो सर्वव्यापी आत्माएं हैं। उन आत्माओं में फिर सर्वव्यापी 5विकार है। ऐसे नहीं कि परमात्मा सर्वव्यापी वा विराजमान है। परमात्मा में फिर 5 भूतों की प्रवेश कैसे होगी। एक एक बात को अच्छी रीत धारण करने से तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। दुनिया वाले रावण सम्प्रदाय क्या कहते हैं और बाप क्या कहते हैं। अब जज करो। हरेक की शरीर में आत्मा है। उस आत्मा में 5विकार प्रवेश करते हैं। सतयुग में यह 5भूत होते ही नहीं। यह है ही भूतों की दुनिया। वह है देवी देवताओं की दुनिया। उनमें कोई भूत नहीं हैं। नाम ही नहीं। नाम ही हैं डीटी वर्ल्ड। यहे हैडेविल वर्ल्ड। डेविल असुर को कहा जाता है। कितना दिन रात का फर्क है। कब कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है तो बोलो नहीं। सर्वव्यापी तो आत्मा है। उसमें फिर 5विकार सर्वव्यापी है। अभी तुम चेंज होते हो। वहां तुम्हारे में कोई भी विकार कोई भी अवगुण नहीं रहता। तुम्हारे में सर्वगुण होते हैं। तुम 16कला सम्पूर्ण . . . बनते हो। पहले थे फिर नीचे उतरे हो। अ इस चक्र का भी मालूम पड़ा है। हम 84 का चक्र कैसे फिरे हैं। अभी हम सो आत्मा का दर्शन होता है। अर्थात इस चक्र का=नोलेज हुआ। उठते-बैठते चलते फिरते तुमको यह नालेज बुधि में रहनी हैं। बापनालेज पढ़ाते हैं। यह रूहानी नालेज बाप भारत में ही आकर देते है। कहते हैं नाहमारा भारत। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत जब स्वर्ग था तोसिर्फ हमारा ही राज्य था। और कोई धर्म नहीं था। न्यु वर्ल्ड थी। नई दिल्ली कहते हैं ना। देहली का नाम असल दिल्ली नहीं था। पस्तिान कहते थे। अभी तो नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली कहते हैं। फिर न नई और पुरानी ही कहेंगे। पस्तिान कहा जावेगा। दिल्ली को कैपीटल भी कहते हैं ना। तो जब इन ल0ना0 का राज्य होगा और कोई भी नहीं होगा। हमारा ही राज्य होगा। अभी तो राज्य नहीं है। इसलिये सिर्फ कहते हैं हमारा भारत देश है। राजाई तो नहीं है। तुम बच्चों की बुधि में सारा ज्ञान चक्र लगाता है। बराबर इस विश्व में पहले2 देवी देवताओं का राज्य था। और किसका भी राज्य नहीं था। जमुना का किनारा, उनको पस्तिान कहा जाता था। देवताओं की कैपीटल दिल्ली ही रही है। तो दिल्ली पर सभी की कशिश होती है। सबसे बड़ी भी है। ऐक्दम सेन्टर है। तो मीठे2 बच्चे जानते हैं पाप तो जरूर हुये हैं। पापात्मायें बन गये हैं। सतयुग में होते हैं पुण्यात्मायें। बाप ही आकर पावन बनाते हैं। जिसके तुम शिवजयन्ति भी मनाते हो। अब जयन्ति अक्षर सभी से लगता है। इसलिये इनको फिर शिवरात्रि कहा जाता है। रात्रि का अर्थ तुम्हारे सिवाय तो कोई समझ न सके। सभी की जयन्ति अर्थातवर्ष डे मनाते हैं। तिथ-तारीख मिनट आदि सभी लिखते हैं। अभी यह हैशिवरात्रि। इसका अर्थ तो समझ न सके। अच्छे2 विद्वान आदि कोई भी नहीं जानते कि शिवरात्रि क्या है। तो मनावे क्या। बाप ने समझाया है रात्रि का अर्थ क्या है। यह जो 5000वर्ष का चक्र है उसमें सुख और दुःख का खेल है। इसको कहा जाता है दिन, इसको कहा जाता है रात। तो बाप दिन और रात के बीच में आते हैं। आधा कल्प है सोझरा आधा कल्प है अंधियारा। भक्ति में तो बहुत ही तीक्2 चलतीहै। यहां है सेकण्ड की बात। बिल्कुल ही सहज है। सहज योग। तुमको पहले जाना है मुक्तिधाम। तुम मुक्तिधाम, जीवनमुक्तिधाम और जीवनबन्ध में कितना समय रहे हो यह तुम बच्चों को याद है। फिर भी तुम घड़ी2 भूल जाते हो। बाप समझाते हैं योग मेअक्षर है ठीक। परन्तु उन्हों का है जिसमानो योग। यह है आत्माओं का योग। सन्यासी लोग अनेक प्रकार के हठ

26-10-68

2

योग आदि सिखलाते हैं तो मनुष्य मुंझ पड़ते हैं। तुम सभी बच्चों का बाप भी है, टीचर भी है तो उन से योग लगाना पड़े ना। टीचर से पढ़ना होता है। बच्चा जन्म लेते हैं तो पहले बाप से योग होता है। फिर 5 वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना। फिर वानप्रस्त अवस्था में गुरु से योग लगाना पड़ता है। तीन मुख्य याद रहती है। वह तो अलग2 होते हैं। यहां एक ही बार बाप आकर बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं। वन्डरफुल है ना। ऐसे बाप को तो जरूर याद करना चाहिए। जन्म-जन्मान्तर तीन को अलग2 याद करते आये हैं। सतयुग में भी बाप से योग होता है। फिर टीचर से होता है। पढ़ने तो जाते हैं ना। बाकी गुरु की वहां दरकार नहीं रहती। क्योंकि सभी सभी सदगति में हैं। यह सभी बातें याद करने में क्या तकलीफ है। बिल्कुल ही सहज है। उनको कहा जाता है सहज याद। परन्तु यह है अनकामन। बाप कहते हैं मैं भी थोड़े समय के लिये लोन लेता हूं। 60 वर्ष में वानप्रस्त अवस्था होती है। कहते हैं ना साठ को लगे लाठ। इस समय सभी कोलाठ लगी हुई है। सभी वान प्रस्त निर्वाणधाम में चले जावेंगे। वह है स्वीटहोम। स्वीटेस्ट होम। उनके लिये कितनी अथाह भक्ति की है। अभी चक्र फिर कर आये हैं। मनुष्यों को यह भी कुछ पता नहीं है। ऐसे ही गपोड़ा लगाये दिया है कि लाखों वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की बात हो फिर तो रिपीट हो न सके। रिस्ट मिलना ही मुश्किल हो जाये। तुमको विश्राम मिलनी है। उसको कहा जाता है सायलेन्स इनकारपोरियल वर्ल्ड। यह है मूल स्वीटहोम। वह है मूल स्वीटहोम। आत्मा बिल्कुल छोटी राकेट है। इनसे तीखा भागने वाला कोई होता नहीं है। यह तो सबसे तीखा है। एक सेकण्ड में। शरीर छूटा और यह भागा। दूसरा शरीर तो तैयार रहता है। ड्रामा अनुसार पूरे टाईम पर उनको आना ही है। ड्रामा कितना एक्युरेट है। इन में कोई इनएक्युरेसी है नहीं। यह तुम जानते हो। बाप भी कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं बिल्कुल एक्युरेट टाईम पर आता हूं। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। मालूम कैसे पड़ता है कि इन में बाप भगवान है, जब नालेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। शिवरात्रि भी मनाते हैं ना। मैं शिव कब, कैसे आता हूं वह तुमको भी पता नहीं है। शिवरात्रि, कृष्ण रात्रि मनाते हैं। राम की नहीं मनाते। क्योंकि फर्क पड़ गया ना। शिवरात्रि में कृष्ण को भी मनाई जाती है। तो रौला हो गया ना। भक्ति मार्ग के शास्त्रों को कितना झूठा कर दिया है। मां बाप झूठे तो सभी रचना झूठी। वहां है ही सच्च। यहां है आसुरी रावण राज्य। तो यह समझने की बातें है ना। यह तो है बाबा। बूढ़े को बाबा कहेंगे ना। छोटे बच्चे को बाबा थोड़े ही कहेंगे। कोई2 प्यार से छोटे बच्चे को भी बाबा कह देते हैं। तो इन्होंने भी कृष्ण को प्यार से कह दिया है। बाबा तो तब कहा जाता है जब बड़े हो और फिर बच्चे पैदा करते हैं। कृष्ण खुद ही प्रिन्स उनको बच्चे कहां से आये। बाप खुद कहते हैं मैं बजुर्ग के तन में आता हूं। शास्त्रों में भी है परन्तु शास्त्रों की सभी बातें एक्युरेट नहीं होती। कोई2 बात ठीक है। ब्रह्मा की आयु मानो प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कहेंगे ना। वह तो जरूर इस समय होगा। प्रजापिता ब्रह्मा की आयु खत्म हो जावेगा। क्योंकि यह मृत्युलोक है। वहां तो खत्म नहीं होगी। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग। यह सिवाय तुम बच्चों की और किसकी बुधि में नहीं हो सकता। बाप बैठ बताते हैं मीठे2 बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम बतलाते हैं। तुम 84 जन्म लेते हो, कैसे, सो भी तुमको पता पड़ गया है। हरेक युग की 1250 वर्ष आयु है। और इतने2 जन्म लिये हैं। 84 जन्मों का हिसाब है ना। 84 लाख का तो हिसाब हो न सके। इनको कहा जाता है 84 का चक्र। 84 लाख की बात तो याद न रहे। यहां कितनी अपरमअपार दुःख है। बिच्छू टिण्डन मिसल बच्चे पैदा होते हैं। इसको कहा जाता है घोर नर्क। बिल्कुल ही छी2 दुनिया है। तुम बच्चे जानते हो अभी हम नई दुनिया में जाने लिये तैयार हो रहे हैं। पाप कट जाये तो महानपुण्यात्मा बन जावेंगे। अभी कोई पाप नहीं करना है। एक दो पर काम कटारी चलाना यह आदि मध्य अन्त दुःख देना है। अभी यह रावण राज्य पूरा होता है। अभी है कलियुग का अन्त। अभी महाभारी लड़ाई है अन्तिम। फिर कोई लड़ाई आदि होगी ही नहीं। कोई भी यज्ञ नहीं रची जाती। यज्ञ जब रचते हैं तो उसमें हवन करते हैं। बची खुची सामग्री सभी स्वाहा कर देते हैं। अभी बाप ने समझाया कि

है यह हैद्र ज्ञान यज्ञ रुद्र शिव बाबा को कहा जाता है। रुद्र माला कहते हैं ना। फूल है रुद्र। फिर मेरु युगल। माला भी युगलों की है। प्रवृति मार्ग है ना। निवृति मार्ग बाद में स्थापन होता है। निवृति मार्ग वालों को प्रवृति मार्ग का रसम रिवाज का कुछ भी पता नहीं। वह तो घरबार छोड़ जंगल में चले जाते हैं। नाम ही पड़ा है सन्यासी। किसका सन्यास। हर्थ एण्ड होम। खाली हाथ निकलते हैं ना। पहले तो गुरु लोग बहुत ही परीक्षा लेते थे। काम कराते थे। असल में सिर्फ आटा ले जाते थे। रसोई नहीं लेते थे। उन्हों को वन में ही रहना है। वन में कन्दमूल फल मिलते हैं। यह भी गमन है। जब सतोप्रधान सन्यासी होते थे तब यह खाते थे। अभी तो बात मत पूछो क्या2 करते रहते हैं। देखा जाता है छोटेपन में भी बहुत गुस्सो से खराब हो पड़ते हैं। बाप भी गंदा बना देते हैं। इसका नाम ही है विषस वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। तो अपने को विषस समझना चाहिए ना। यह है वेश्यालय। बाप कहते हैं सतयुग में पर मेरा नाम रखा हुआ है शिवालय। वायसलेस वर्ल्ड बनाना बाप का ही काम है। यहां तो सभी हैं पतित मनुष्य। इसलिये देवी देवता के बदले हिन्दु नाम रख दिया है। बाप तो सभी बातें समझाते रहते हैं। तुम असल में हो ही बेहद के बाप के बच्चे। वह तुमको 21 जन्मों का वरसा देते हैं। फिर रावण राज्य होता है। तुमको जो बाप का वरसा मिला वह 21 पीढ़ी चला। 21 पीढ़ी अब पूरी होती है। यह तो अच्छी रीत समझ में आता है ना। लाखों वर्ष की बात होती तो समझ कैसे सकते। स्कूल में बच्चे हिस्ट्री जागराफी भी अधूरे पढ़ते हैं। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी तो कोई जानते ही नहीं। तुम बच्चे जानते हो इस्लामी बोधीधर्म को इतना समय हुआ। बाकी दो युगों को लाखों वर्ष देवें तो पता नहीं मनुष्य कितना चिट्टियों सिसल हो जाये। तो बाप बैठ मीठे2 बच्चों को समझाते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। पाप कटने लिये ही तुम बुलाते हो। साधु सन्त आदि सभी पुकारते हैं हे पतित-पावन ... अर्थ कुछ भी नहीं समझते। पतित पावन कौन है, ऐसे ही गाने लग पड़ते। खुद ताली बजाते हैं तो उनको देख सभी बजाते हैं। पावन बन कैसे सकते। घड़ी2 स्नान करने जाते हैं। तो जरूर पतित हैं ना। घड़ी फिर कह देते शिव बाबा को कि सर्वव्यापी है। कुत्ते बिल्ले में है। कोई न उन से पूछे परमात्मा से योग कैसे लगावें, उन से मिलें कैसे तो कह देते वह तो सर्वव्यापी है। क्या रास्ता बताते हैं। कह देते वेद-शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिल जावेगा। परन्तु बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद ड्रामा के प्लेन अनुसार आता हूं। यह ड्रामा का राज़ सिवाय बाप के और कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष का ड्रामा तो हो नहीं सकता। अब बाप समझाते हैं यह तो 5000 वर्ष की बात है। कल्प पहले भी बाप ने यही कहा था कि मन्मनाभव। यह है महामंत्र। माया पर जीत पाने का मंत्र है ना। बाप ही बैठ अर्थ समझाते हैं। दूसरा कोई अर्थ नहीं समझाते। गाया भी जाता है सर्व का सद्गति दाता एक। कोई मनु तो हो न सके। देवताओं की भी बात नहीं है। वहां तो सुख ही सुख है। वहां कोई भक्ति नहीं करते हैं। भक्ति की जाती है भगवान से मिलने लिये। सतयुग में भक्ति होती ही नहीं। क्योंकि 21 जन्मों का वरसा मिला हुआ है। तब गाया भी जाता है दुःख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोये। यहां तो अथाह दुःख है। घड़ी2 कहते हैं भगवान रहम करो। यह कलियुगी दुःख की दुनिया भी सदैव नहीं रहती है। सतयुग त्रेता पास्ट हो गई फिर होगी। लाखों वर्ष की बात तो याद भी न रह सके। अभी बाप तो सारी नालेज देते हैं। और रचना के आदि मध्य अन्त का राज भी समझाते हैं। 5000 वर्ष की बात है। तुम बच्चों को ध्यान में आ गया अभी तुम पराये राज्य में हो। तुमको अपना राज्य था ना। यहां तो लड़ाई से अफा2 राज्य लेते हैं। हथियारों से, आपस में मारा मारी से राज्य लेते हैं। तुमको तो सृष्टि भी सतोप्रधान चाहिए। पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया बनती है। इनको कहा जाता है कलियुग पुरानी दुनिया। सतयुग है नई दुनिया। यह भी कोई मनुष्य मात्र को पता नहीं। सन्यासी लोग कह देते यह अपनी कल्पना है। यहां ही सतयुग है यहां ही कलियुग है। बाकी अनेक प्रकार के मन के संकल्प हैं। अभी बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। गुरु लोग जो भी बातें सुनाते हैं वह सभी है रांग। सन्यासी घर-बार छोड़ जाते हैं। घर से बाप चला गया तो बाकी निधणके हो गई ना। सारी दुनिया आपस में लड़ती झगड़ती रहती है। कोई धनी धोणी है नहीं। निधणके आरफन्स है। एक भी बाप को नहीं जानते हैं।—

26-10-68

अगर कोई जानता होता तो परिचय दे ना। सतयुग त्रेता क्या चीज है किसको पता थोड़ेही है। तुम बच्चों को बाप अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाप ही सभी को जानते हैं। जानीजाननहार है अर्थात नालेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर सुख का सागर है। इनसे ही हमको वरसा मिलना है। बाप पूराआपसमान बनाते हैं। नालेज में आप समान बनाते हैं। जैसे टीचर मे आपसमान बनाते हैं। बाकी आपसमान कैसे बनावेंगे वह तो शादी कर बच्चे पैदा करे तब बाप कहलावेंगा। यहतो सभी का बाप एक ही है। सर्व की सदगति दाता है। बाकी सर्व व्यापी नहीं हैं। सर्वव्यापी तो आत्मा है। उसमें फिर 5भूत हैं। कोई भी बात बच्चों की समझ मे न आती हो तो पूछ सकते हो। बाकी तो बाप की डायरेक्शन पर चलना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तोतुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम टूनसफर हो जावेंगे। सभी आत्मायें शरीर छोड़कर चली जावेंगी। संगम युग पर ही तुम बच्चों को सभी बातों का पता पड़ता है। तुम सतयुग में जाते हो, तो बाकी सभी मुक्तिधाम में चले जाते हैं। सभी आत्मायें शरीर को यहां ही छोड़ चली जावेंगी। शिव बाबा की बेहद की सारी बारात पिछाड़ी में जावेंगी। सो तो आगे चलकर समझते जावेंगे। हम कौन सा पद पावेंगे। वह भी पता पड़ेगा। पछताना भी यहां ही पड़ेगा। सेकण्ड में सा० होता है। गर्भ जेल में भी सा० कर फिर सजा खाते हैं। सा० बिगरसजा मिल न सके। गर्भ जेल में भी कितनी सजायें खाते हैं। वहां तो गर्भ महल होता है। बच्चों को सारी बातें क्लीयर कर समझाते रहते हैं। बाबा के पास कोई वेद-शास्त्र उपनिषद आदि है क्या। बाप तो कहते हैं यह शास्त्र का भूसा सारा बुधि से निकालो। हियर नो भूसा। टाक नो भूसा। यह समझने की बातें हैं। गोरख धंधे आदि में जाने से यह फिर सभी बातें उड़ जाती हैं। यहां फिर भी सात रोज सेफ्टी में रहते हैं। सात रोज का कोर्स कहा जाता है। पाठ भी सात रोज रखते हैं। वास्तव में सात रोज उसको कहा जाता है जो बाहर की कोई भी बात याद न आये। कोई भी चिट्ठी चपाटी नहीं जाये। नहीं तो जरूर ख्यालात आवेंगे। इसको भट्ठी कहा जाता है। वहां जरा मुश्किल है। हां पाकिस्तान में तुम्हारी भट्ठी थी। कोई थे नहीं। पार्टीशन हुआ तो सभीभाग गये। सभी एक समान काम काज करते थे। तो बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। बच्चे फिर भी भूल जाते हैं। इसको कहा जाता है मन्मनाभव। वह है गीता का एपीसुड। पुरुषोत्तम तो संगम युग है ना। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर-अंधियारे में हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

भावनगर से समाचार आया था, भावनगर के नजदीकएक गांव हैवहां एक बड़ा चण्डकायज्ञ विश्व में शान्ति के लियेरच रहे हैं। जिसमें 15। हवन कुण्ड आदि बनाई है। सो भावनगर निवासियों का विचार हैवहां स्टाल ले सर्विस करने का सो इसके लिये बाप दादा ने बम्बई निवासियों को डायरेक्शन लिखी है कि वहां ऐसे2 बोर्ड लगाओ।×:- बम्बई निवासी नूरे रत्न कुमारकांप्रति सभी सर्विस एबुल बच्चों सहितयाद प्यार बादसमाचार कि पत्र तो पाते रहते हैं। अपना सालोगन किईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैआत्मायें सर्वव्यापी है, माया सर्वव्यापी है, गीता परमपिता परमात्मा ने गाई है कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर जो अब चलरहा है। पतित-पावन एक परमपिता परमात्मा शिव हैन कि गंगा जु जमुना। रूहानी ज्ञानस्प्रीचुअल नालेज सिर्फ एक परमपिता परमात्माशिव सदगतिदाता है मनुष्य मनुष्य की गति का सदगति कर नहीं सकता। ऐसी2पायन्दय जो बार बार समझाई हुई हैउनका बड़ा बोर्ड लगा दो। यह कोई की निन्दा नहीं। कल्प 5000वर्ष का है। हरेक युग 1250वर्ष का है ऐसे2 बड़े2 बोर्ड पर लिख पबलिक कोसाक्षात्कार करना है। अक्सर बच्चे भूल जाते हैं वा डरते रहते हैं। बच्चों में बल कम है। देह-अभिमान कारण। इसलिये बाप दादा खुद कहते हैं कि समय चाहिए जब कि योगबल का जोहर ज्ञान तलवार में हो। देह-अभिमान तो अथाह है। बच्चों में। अपने में समझते कम हैं।

:-**** **:-*